इकाई–1

1. अति प्राचीन काल में संगीत।
2. प्राचीन काल में संगीत।
3. वैदिक काल अथवा वेद कालीन संगीत।
4. भरतकालीन संगीत।
5. रामायणकालीन अथवा महाभारत काल में वर्णित संगीत तत्त्व।
6. जैन, मौर्य और बौधकालीन संगीत।
7. गुप्तकालीन संगीत।
8. मुगलकालीन अथवा मध्यकालीन संगीत
9. आधुनिक कालीन संगीत।

इकाई–2

1. पुराणों, प्रातिशाख्यों अथवा शिक्षाग्रंथों में संगीत।
2. नाट्यशास्त्र में संगीत तत्त्व।
3. सारणा चतुष्टयी।
4. श्रीनिवास, पं. अहोबल, पं. व्यंकटमुखी, पं. भातखण्डे द्वारा स्थापित वीणा के तार पर स्वरों का अध्ययन।
5. प्राचीनकालीन विभिन्न वीणाओं का अध्ययन
6. प्राचीनकालीन वाद्यों का अध्ययन
7. नाद तथा नाद के प्रकार और भेद।
8. श्रुति स्वर विभाजन, प्राचीन मध्य तथा आधुनिक।
9. स्वरों की आन्दोलन संख्या का अध्ययन तार की लम्बाई के आधार पर
10. तान तथा तान के प्रकार और भेद।

इकाई–3

1. रस तथा रस-सिद्धान्त।
2. वंदिशों, तालों, लयों और स्वर तथा राग के माध्यम से रस की सृष्टि।
3. राग से रस तथा भाव की उत्पत्ति।
4. रस निष्पत्ति के आवश्यक तत्त्व।
5. भाव के माध्यम से रस का प्रस्तुतिकरण।
6. सौन्दर्य तथा सौन्दर्य सिद्धान्त।
7. विभिन्न आचार्यों का रस तथा सौन्दर्य पर टिप्पणियाँ।
8. रसशास्त्र और सौन्दर्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन।
9. राग ध्यान चित्र।

इकाई–4

1. संगीत से तात्पर्य और उसके विभिन्न शैलियों तथा प्रकारों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. संगीत का ललितकला से संबंध।
3. संगीत का मनोविज्ञान से संबंध।
4. संगीत का आध्यात्मिक, व्यावहारिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक विशेषताओं का अध्ययन।
5. वाणी तथा उसके प्रकार।
6. संगीत में घरानों का महत्व।
7. संगीत के प्रमुख घरानें, यथा–दिल्ली, जयपुर, आगरा, ग्वालियर, रामपुर, किराना, मेवाती, पटियाला, बेतिया और दरभंगा।
8. जीवनियाँ–स्वामी हरिदास, तानसेन, वैजू बावरा, पं. विष्णु नारायण भातखण्डे, पं. विष्णु दिगम्बर पलुष्कर, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, उस्ताद अब्दुल करीम खाँ, पं. भीमसेन जोशी, पं. रामचतुर मल्लिक, पं. सियाराम तिवारी, पं. सामता प्रसाद मिश्र, उस्ताद अल्लारखा खाँ, पं. रविशंकर, निखिल बनर्जी, पन्ना लाल घोष, हरिप्रसाद चौरसिया।

इकाई–5

1. पारिभाषिक शब्द–नाद, श्रुति, स्वर, सप्तक, सरगम, निबद्ध-अनिबद्ध गान, आलाप, तान, पकड़, विभाग, ताली, खाली, वादी-सम्वादी, विवादी-अनुवादी, वक्र स्वर, शुद्ध स्वर, विकृत स्वर, स्पर्श स्वर, अंश स्वर, अर्ध्वदर्शक स्वर, वर्जित स्वर, थाट, वर्ण, मीड़, गमक, खटका, मुर्की, अल्पत्व-बहुत्व, मार्गी-देशी, पूर्वांग-उत्तरांग, आविर्भाव-तिरोभाव, गीति, अपन्यास, मधुर स्वर परमेलप्रवेशक, संकीर्ण राग, जनक राग, आश्रय राग, उदग्राह, वस्तु, रूपक, मूर्च्छना, जाति, मेलापक, ग्रह, कण, ध्रुव, रागालप्ति, वाग्गेयकार, कलावंत, नायिकी-गायिकी, कंपन, आन्दोलन, ध्वनि, सांगीतिक ध्वनि, असांगीतिक ध्वनि, तारना, तीव्रता, ध्वनि का जाति गुण, ध्वनि का अपवर्त्तन-परावर्त्तन, अनुनाद-प्रतिध्वनि, तरंग, टुकड़ा, तिहाई, तोड़ा, मोहरा, उठान, कायदा, रेला, पेशकार, लहरा, पलटा, गत, परन, जमजमा, झाला, जोड़, मीड़, सुत या घसीट, कम्पन, आन्दोलन।

31/05/19

2. गायकों के गुण-दोष।
3. आलाप तथा आलाप के प्रकार।
4. स्वयंभूनाद।
5. षड्ज-मध्यम तथा षड्ज-पंचम स्वर संवाद।
6. ग्रंथ तथा ग्रंथकार–नाट्यशास्त्र, संगीत मकरन्द, संगीत रत्नाकर, चतुर्दण्डी प्रकाशिका, वृहदेशी, राग तरंगिनी।

इकाई–6

1. गायन तथा गायन के प्रकार।
2. ग्राम तथा ग्राम के प्रकार।
3. मूर्च्छना तथा मूर्च्छना से थाटों की उत्पत्ति।
4. षड्ज-मध्यम ग्राम का तुलनात्मक अध्ययन।
5. मेल राग पद्धति।
6. राग-रागांग पद्धति।
7. राग-रागिनी वर्गीकरण।
8. जाति गायन तथा उसके लक्षण।
9. प्रबन्ध तथा उसके प्रकार।

इकाई–7

1. उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय संगीत का अध्ययन।
2. उत्तर तथा दक्षिणी संगीत के स्वरों तथा श्रुतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. दक्षिण भारतीय ताल-पद्धति की विवेचना।
4. दक्षिण भारतीय संगीत का विकास विभिन्न ग्रंथों के संदर्भ में।
5. हिन्दुस्तानी तथा कार्णाटकीय संगीत पद्धति के थाट (मेल) की तुलना।
6. हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति तथा कर्णाटकीय संगीत पद्धतियों की स्वर पद्धति तथा सप्तक-चिह्न पद्धतियों की तुलनात्मक अध्ययन।
7. हिन्दुस्तानी तथा कर्णाटकीय संगीत में अन्तर।

इकाई–8

1. पाश्चात्य स्वर तथा पाश्चात्य स्वर सप्तकों का अध्ययन।
2. भारतीय तथा पाश्चात्य स्वर का तुलनात्मक अध्ययन।
3. ध्वनि से तात्पर्य, ध्वनि प्रसारण में विभिन्न उपकरणों का महत्व।
4. पाश्चात्य संगीत का भारतीय संगीत पर प्राक्षेप।
5. मेजर टोन, माइनर टोन, सेमी टोन, टेम्पर्ड स्केल, नेचुरल स्केल, पाइथागोरियन स्केल, क्रोमेटिक स्केल, डायनोटिक स्केल, मेजर स्केल, माइनर स्केल, पेण्टाटानिक स्केल, हेक्साटॉनिक स्केल, हेप्टाटानिक स्केल, कार्ड्स, स्वरान्तर, सच्चा स्वर सप्तक।।

31/05/19

6. हार्मोनी एवं मेलॉडी।
7. पाश्चात्य तथा भारतीय सांगीतिक दृष्टिकोण।
8. वाइस कल्चर का सामान्य सिद्धान्त।
9. पाश्चात्य (स्वर लिपि पद्धति) नोटेशन सिस्टम।

इकाई–9

1. तालों के दस प्राणों की विवेचना।
2. समान तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. दक्षिण तालों का परिचय।
4. दक्षिण भारतीय ताल पद्धति तथा उसके भेद।
5. उत्तरी तथा दक्षिणी तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
6. लय, लयकारी तथा लय के प्रकारों का अध्ययन।
7. विभिन्न गायन शैलियों में प्रयुक्त तालों का अध्ययन।
8. पं. विष्णु दिगम्बर पलुष्कर तथा पं. विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा प्रयुक्त ताल–चिह्न।
9. ताल तथा छन्द का पारस्परिक संबंध।

इकाई–10

1. राग से तात्पर्य।
2. रागों के समय–चक्र–सिद्धान्त का अध्ययन।
3. राग–गायन का सिद्धान्त।
4. सम प्राकृतिक रागों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. थाट वर्गीकरण।
6. गणितीय सिद्धान्त के आधार पर थाटों से रागों की उत्पत्ति।
7. दश–विध राग–वर्गीकरण।
8. स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत अध्ययन।
9. पं. विष्णु नारायण भातखण्डे तथा पं. विष्णु दिगम्बर पुलस्कर के स्वरलिपि को लिखने का ज्ञान और तुलना।

31.5.19

Dr. Swasti Verma
Associate Professor.
and Head Deptt of Music
M.D.D.M. College
B.R.A.B.U., Muzaffarpur

■ ■ ■